आभासी अंक 07
मार्च 2025

काशी प्रतिबिंब

राजभाषा विभाग
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

काशी प्रतिबिंब

❁ आभासी अंक 07 ❁ मार्च 2025

राजभाषा विभाग, पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

सत्यमेव जयते

संरक्षक

विनीत कुमार श्रीवास्तव
मंडल रेल प्रबंधक

प्रधान संपादक

राजेश कुमार सिंह
अपर मंडल रेल प्रबंधक (ऑप)
सह अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक

नवनीत कुमार वर्मा
वरिष्ठ आंकड़ा संसाधन प्रबंधक
सह राजभाषा अधिकारी

सह संपादक व समस्त संपादन

अमित कुमार साव
वरिष्ठ अनुवादक

राजभाषा विभाग टीम

पूनम त्रिपाठी
वरिष्ठ अनुवादक

ममता यादव
वरिष्ठ अनुवादक

अजय कुमार सिंह
वरिष्ठ अनुवादक

अमित कुमार साव
वरिष्ठ अनुवादक

दिव्या शर्मा
कनिष्ठ अनुवादक

(नोट : पत्रिका के अंतर्गत प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं)

पत्र व्यवहार : संपादक, काशी प्रतिबिंब,
राजभाषा विभाग,
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

ईमेल : rba.ner.bsb@gmail.com

वेबसाईट :
ner.indianrailways.gov.in

संदेश 03

संपादकीय 06

क्र. सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ
01.	कुम्भ : आस्था का संगम	अमित कुमार साव	07
02.	चलो नहाने कुम्भ	सन्तोष कुमार विश्वकर्मा	09
03.	मिलते जुलते रहा करो	अमित दुबे	09
04.	कुछ अनकहे–अधूरे पन्ने	नीरू अवस्थी	10
05.	मेरी माँ	डॉ. 'ऐनुल' बरौलवी	12
06.	छात्रवीर	सौरभ कुमार शर्मा	13
07.	ज़िंदगी	अदिति	14
08.	मौत	पूनम कुमारी	14
09.	होली की पुकार	सोनू कुमार	15
10.	अपना–अपना कुंभ	पल्लवी	16
11.	वो सपना मेरा	अमित कुमार साव	19
12.	कलाकार	नीरू अवस्थी	20
13.	महिला सशक्तीकरण की ओर एक कदम	दिव्या शर्मा	21
14.	मीठी बोली कड़वी बोली	संजय कुमार गुप्ता	23
15.	मन के किनारे	ममता यादव	25
16.	2025 केलेंडर	पूर्वोत्तर रेलवे	26
17.	अवकाश तालिका 2025	पूर्वोत्तर रेलवे	34
18.	राजभाषा विभाग की गतिविधियाँ		35
19.	मंडल की गतिविधियाँ		37

मंडल रेल प्रबंधक का संदेश

प्रिय रेलकर्मी साथियों और पाठकों,

सर्वप्रथम विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएँ।

"विश्व हिंदी दिवस" प्रत्येक वर्ष 10 जनवरी को मनाया जाता है। यह हिंदी भाषा के महत्व को समझने और उसे वैश्विक स्तर पर बढ़ावा देने का एक महत्वपूर्ण अवसर है। यह दिन हमें स्मरण दिलाता है कि हिंदी न केवल भारत की राजभाषा है, बल्कि यह विश्वभर में एक सशक्त और प्रभावशाली भाषा के रूप में उभर रही है।

"काशी प्रतिबिंब" पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी को सशक्त बनाने के लिए हम निरंतर प्रयासरत हैं। यह पत्रिका हमारे सभी कर्मचारियों और उनके प्रयासों की सराहना करने का एक उत्कृष्ट माध्यम है। इसके माध्यम से हम नए विचारों को साझा करते हैं और दूसरों से प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

हाल ही में, प्रयागराज में आयोजित महाकुम्भ में भारतीय रेल और हमारे मंडल के कर्मचारियों और अधिकारियों ने प्रशंसनीय कार्य किया है। महाकुंभ एक ऐतिहासिक और धार्मिक आयोजन है, जो हिन्दू धर्म के प्रमुख त्योहारों में से एक माना जाता है।

महाकुंभ का आयोजन प्रयागराज के त्रिवेणी संगम (गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम स्थल) पर होता है, जहां इस बार करोड़ों श्रद्धालु पवित्र स्नान के लिए एकत्रित हुए। यह मेला न केवल भारत, बल्कि पूरे विश्व से श्रद्धालुओं को आकर्षित करता है।

यह आयोजन भारतीय रेलवे और स्थानीय प्रशासन के लिए भी एक बड़ी चुनौती थी। महाकुंभ के समय हमारी पूरी टीम ने विशेष रूप से यात्रा की सुविधा, भीड़ नियंत्रण, सुरक्षा व्यवस्था और हर एक यात्री की जरूरतों का ध्यान रखा, ताकि तीर्थयात्रियों को एक सुरक्षित और आरामदायक यात्रा का अनुभव मिल सके।

इस दौरान हमें जो सहयोग और समर्पण प्राप्त हुआ, वह अत्यंत प्रेरणादायक था। हम सभी को गर्व है कि हम इस ऐतिहासिक और धार्मिक अवसर का हिस्सा बने और रेलवे के माध्यम से लाखों श्रद्धालुओं की सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ।

आइए, हम सभी मिलकर अपने कार्यों में उत्कृष्टता बनाए रखें और भविष्य में भी इसी तरह की सफलताएँ अर्जित करें।

आपके सहयोग और समर्पण के लिए धन्यवाद।

विनीत कुमार श्रीवास्तव
मंडल रेल प्रबंधक

अपर मंडल रेल प्रबंधक का संदेश

प्रिय रेल परिवार,

"काशी प्रतिबिंब" की त्रैमासिक यात्रा में हम एक बार फिर आपके बीच एक नया अंक लेकर उपस्थित हैं। इस पत्रिका के माध्यम से आपके साथ संवाद करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। यह पत्रिका न केवल हमारे कार्यक्षेत्र की उपलब्धियों और विचारों को साझा करने का एक महत्वपूर्ण मंच है, बल्कि यह समाज में रेलवे से जुड़ी जागरूकता और प्रेरणा फैलाने का भी एक प्रयास है।

काशी, जिसे हम "प्राचीनता की नगरी" और "मोक्ष की भूमि" के रूप में जानते हैं, भारतीय संस्कृति और इतिहास का अभिन्न हिस्सा है। काशी के समृद्ध इतिहास और संस्कृति से प्रेरित होकर, हम निरंतर अपनी सेवाओं में सुधार करने और यात्रियों की संतुष्टि सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

इस पत्रिका के माध्यम से, हम अपने विचारों, कार्यों और योजनाओं को एक मंच पर प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं ताकि हमारा समाज और हमारे सहकर्मी हमारे लक्ष्यों और दृष्टिकोण से परिचित हो सकें। हमें गर्व है कि हम भारतीय रेलवे के हिस्से के रूप में कार्यरत हैं।

इस पत्रिका का मूल उद्देश्य यह है कि राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रचार-प्रसार हो सके, साथ ही, कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभाओं को एक बेहतर मंच मिल सके। राजभाषा हिंदी भारतीय संविधान का एक अभिन्न और गौरवशाली अंग है, अतः हम सभी को इसके प्रति कर्तव्यनिष्ठ बने रहने की आवश्यकता है।

मैं "काशी प्रतिबिंब" के इस अंक में सम्मिलित सभी रचनाकारों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य में भी आपका सहयोग हमें निरंतर मिलता रहेगा।

साथ ही, इस प्रकाशन कार्य के लिए मैं राजभाषा विभाग के अधिकारी और सभी कर्मचारियों को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

राजेश कुमार सिंह
अपर मंडल रेल प्रबंधक (ऑप)
सह अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी

राजभाषा अधिकारी का संदेश

प्रिय पाठकों,

नम्र अभिवादन,

यह मेरे लिए गर्व की बात है कि हम "काशी प्रतिबिंब" की इस त्रैमासिक पत्रिका के माध्यम से एक बार फिर आपसे संवाद स्थापित कर रहे हैं। सर्वप्रथम, आप सभी को "विश्व हिंदी दिवस" और पवित्र महापर्व महाकुंभ के अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएँ।

"विश्व हिंदी दिवस" हर साल 10 जनवरी को मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य हिंदी भाषा की महत्ता को जागरूक करना और इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बढ़ावा देना है। भारत सरकार ने 10 जनवरी 2006 से इस दिन को "विश्व हिंदी दिवस" के रूप में मनाने की शुरुआत की थी। यह दिन हमें याद दिलाता है कि हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, पहचान और आपसी संवाद का माध्यम है।

हमारे संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है और यह हमारे राष्ट्रीय एकता, समरसता और सांस्कृतिक विविधता को भी अभिव्यक्त करता है। भारतीय रेलवे ने हमेशा हिंदी को अपनी कार्यप्रणाली में प्रमुख स्थान दिया है। पूर्वोत्तर रेलवे भी इस दिशा में निरंतर प्रयासरत है।

"काशी प्रतिबिंब" पत्रिका के माध्यम से हम न केवल हिंदी के महत्व को बढ़ावा देते हैं, बल्कि यह भी सुनिश्चित करते हैं कि हमारे कार्यक्षेत्र में हिंदी भाषा का सही और प्रभावी उपयोग हो।

आशा है कि इस अंक के माध्यम से आप हमारे प्रयासों को समझेंगे और राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में हमारा सहयोग करेंगे।

हम निरंतर आप सभी के सहयोग और सुझावों से प्रेरित होते हुए रेलवे सेवाओं को और अधिक प्रभावी और उन्नत बनाने की दिशा में कार्यरत रहेंगे।

आपका साथ हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है। आइए, हम सभी मिलकर रेलवे के विकास की इस यात्रा को और भी उत्कृष्ट बनाएं।

शुभकामनाओं सहित,

नवनीत कुमार वर्मा

वरिष्ठ आँकड़ा संसाधन प्रबंधक

सह राजभाषा अधिकारी

संपादकीय

प्रिय साथियों और पाठकों,

"काशी प्रतिबिंब" के सातवें आभासी अंक में आपका हार्दिक स्वागत है। दुनिया तेजी से डिजिटलीकरण की ओर बढ़ रहा है। यह हमारे जीवन का एक अभिन्न हिस्सा बन चुका है। अब ई-बुक्स, ई-ऑफिस और ई-पत्रिका का युग है। इसी को ध्यान में रखते हुए हमने "काशी प्रतिबिंब" के आभासी अंक का प्रकाशन कार्य प्रारंभ किया।

ई-पत्रिकाएँ पाठकों के लिए नया माध्यम तो है, साथ ही, यह मोबाइल, लैपटॉप / कम्प्यूटर के माध्यम से आसानी से पढ़ा जा सकता है। साथ ही, पर्यावरण को बचाने में भी सहायता करता है। जितना कम हम कागजों का प्रयोग करेंगे, उतना अधिक पर्यावरण को संरक्षित और सुरक्षित रखने में हम सहायता कर सकते हैं।

रेलवे में कार्यरत हमारे साथी न केवल अपने कार्यक्षेत्र में दक्ष हैं, बल्कि उनके भीतर विविध क्षेत्रों में अपार क्षमता और रचनात्मकता भी है। उनके मन के सागर में भी कहीं न कहीं प्रतिभाओं की लहर उमड़ती है। जरूरत है तो बस उसे एक सही मंच प्रदान करने की। हमारे बीच भी कई ऐसे ही प्रतिभावान साथी हैं, जिनके हृदय में कहीं कोई कवि, कोई साहित्यकार, कथाकार, चित्रकार शुप्त अवस्था में है। "काशी प्रतिबिंब" ऐसे ही प्रतिभाशाली व्यक्तियों को एक मंच प्रदान करता है। यह पत्रिका उनके रचनात्मक कौशल को एक माला में पिरोने का काम करता है।

यह पत्रिका न केवल हमारे रेलवे परिवार की उपलब्धियों और गतिविधियों को साझा करने का एक माध्यम है, बल्कि यह हम सभी के बीच संवाद और एकता को भी बढ़ावा देती है। हमें गर्व है कि हम इस पत्रिका के माध्यम से इनकी कृतियों को दुनिया के सामने ला सकते हैं।

हमारे इस प्रयास से, हम न केवल एक स्वस्थ और रचनात्मक कार्य वातावरण को बढ़ावा दे रहे हैं, बल्कि उन सभी लेखकों, कलाकारों और रचनाकारों को भी प्रोत्साहित कर रहे हैं, जो साहित्य, कला और संस्कृति में अपनी प्रतिभा दिखाना चाहते हैं। इस अंक में, हम आपके लिए कुछ दिलचस्प लेख, कविताओं और कहानियों को प्रस्तुत कर रहे हैं।

हम आशा करते हैं कि इस पत्रिका के माध्यम से हम सभी के बीच सहयोग और प्रेरणा का संचार हो। आपके सुझाव और प्रतिक्रिया हमारे लिए हमेशा महत्वपूर्ण रहे हैं। कृपया पत्रिका को पढ़ें और अपने विचार हमें अवश्य भेजें।

आपके सुझाव और योगदान इस पत्रिका को और बेहतर बनाएंगे।

धन्यवाद।

अमित

अमित कुमार साव

वरिष्ठ अनुवादक

कुंभ : आस्था का संगम

अमित कुमार साव

कुंभ मेला एक महत्वपूर्ण हिंदू तीर्थयात्रा है, जो लगभग हर 6, 12 और 144 साल में मनाया जाता है, जो बृहस्पति की आंशिक या पूर्ण परिक्रमण से संबंधित है और दुनिया में सबसे बड़ी मानव सम्मेलन का प्रतिनिधित्व करता है। परंपरागत रूप से, चार प्रमुख तीर्थ स्थलों, अर्थात् प्रयागराज (गंगा-यमुना-सरस्वती नदियों का संगम), हरिद्वार (गंगा), नासिक-त्रयंबक (गोदावरी), और उज्जैन (शिप्रा) में कुंभ मेले का आयोजन किया जाता है।

6 वर्षों में आयोजित किए जाने वाले कुंभ मेले को "अर्द्धकुंभ" कहा जाता है, 12 वर्षों में आयोजित किए जाने वाले कुंभ मेले को "पूर्णकुंभ अथवा कुंभ" और 144 वर्षों में आयोजित किए जाने वाले कुंभ मेले को "महाकुंभ" कहा जाता है। 2013 के कुंभ के बाद 2019 में प्रयागराज में अर्धकुम्भ मेले का आयोजन हुआ था और अब 2025 में पुन: कुंभ मेले का आयोजन "महाकुंभ" के रूप में हो रहा है।

ज्योतिषीय गणनाओं के अनुसार यह मेला पौष पूर्णिमा के दिन आरंभ होता है और मकर संक्रान्ति इसका विशेष ज्योतिषीय पर्व होता है, जब सूर्य और चन्द्रमा, वृश्चिक राशि में और वृहस्पति, मेष राशि में प्रवेश करते हैं। मकर संक्रान्ति के होने वाले इस योग को 'कुम्भ स्नान योग' कहते हैं और इस दिन को विशेष मंगलकारी माना जाता है, क्योंकि ऐसा माना जाता है कि इस दिन पृथ्वी से उच्च लोकों के द्वार इस दिन खुलते हैं और इस प्रकार इस दिन स्नान करने से आत्मा को उच्च लोकों की प्राप्ति सहजता से हो जाती है। यहाँ स्नान करना साक्षात् स्वर्ग दर्शन माना जाता है।

'कुम्भ' का शाब्दिक अर्थ "घड़ा, सुराही, बर्तन" है। यह वैदिक ग्रन्थों में पाया जाता है। इसका अर्थ, अक्सर पानी के विषय में या पौराणिक कथाओं में अमरता (अमृत) के बारे में बताया जाता है। मेला शब्द का अर्थ है, किसी एक स्थान पर मिलना, एक साथ चलना, सभा में या फिर विशेष रूप से सामुदायिक उत्सव में उपस्थित होना। यह शब्द ऋग्वेद और अन्य प्राचीन हिन्दू ग्रन्थों में भी पाया जाता है। इस प्रकार, कुम्भ मेले का अर्थ है "अमरत्व का मेला" है।

पौराणिक कथा :

कुम्भ पर्व के आयोजन को लेकर दो-तीन पौराणिक कथाएँ प्रचलित हैं, जिनमें से सर्वाधिक मान्य कथा देव-दानवों द्वारा समुद्र मन्थन से प्राप्त अमृत कुम्भ से अमृत बूँदें गिरने को लेकर है। इस कथा के अनुसार महर्षि दुर्वासा के शाप के कारण जब इन्द्र और अन्य देवता कमजोर हो गए तो दैत्यों ने देवताओं पर आक्रमण कर उन्हें परास्त कर दिया। तब सब देवता मिलकर भगवान विष्णु के पास गए और उन्हे सारा वृतान्त सुनाया। तब भगवान विष्णु ने उन्हे दैत्यों के साथ मिलकर क्षीरसागर का मन्थन करके अमृत निकालने की सलाह दी। भगवान विष्णु के ऐसा कहने पर सम्पूर्ण देवता दैत्यों के साथ सन्धि करके अमृत निकालने के यत्न में लग गए। समुद्र मंथन से कई दिव्य चीजें निकलीं, जैसे लक्ष्मी, कामधेनु गाय, पारिजात वृक्ष, और सबसे महत्वपूर्ण अमृत कलश।

अमृत कुम्भ के निकलते ही देवताओं के इशारे से इन्द्रपुत्र जयन्त अमृत-कलश को लेकर आकाश में उड़ गया। जब जयंत अमृत कलश लेकर भागे, तो देवताओं ने इसकी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए विशेष प्रबंध किए। सूर्य देव ने अमृत कलश को टूटने से बचाने की जिम्मेदारी ली, चंद्रमा को यह सुनिश्चित करना था कि अमृत छलक न जाए, गुरु बृहस्पति को असुरों को रोकने का कार्य सौंपा गया तथा शनि देव को जयंत पर नजर रखना था ताकि वह स्वयं अमृत न पी लें। उसके बाद दैत्यगुरु शुक्राचार्य के आदेशानुसार दैत्यों ने अमृत को वापस लेने के लिए जयन्त का पीछा किया और घोर परिश्रम के बाद उन्होंने बीच रास्ते में ही जयन्त को पकड़ा। तत्पश्चात अमृत कलश पर अधिकार जमाने के लिए देव-दानवों में बारह दिनों तक अविराम युद्ध होता रहा। इस दौरान, जब देवता अमृत कलश लेकर स्वर्ग लौट रहे थे, तभी चंद्रमा से एक गलती हो गई। उनकी असावधानी के कारण अमृत की चार बूंदें पृथ्वी के चार स्थानों (प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक) पर गिरी थीं।

ज्योतिष महत्व :

पौराणिक विश्वास जो कुछ भी हो, ज्योतिषियों के अनुसार कुम्भ का असाधारण महत्व बृहस्पति के कुम्भ राशि में प्रवेश तथा सूर्य के मेष राशि में प्रवेश के साथ जुड़ा है। ग्रहों की स्थिति हरिद्वार से बहती गंगा के किनारे पर स्थित हर की पौड़ी स्थान पर गंगा नदी के जल को औषधिकृत करती है तथा उन दिनों यह अमृतमय हो जाती है। यही कारण है कि अपनी अन्तरात्मा की शुद्धि हेतु पवित्र स्नान करने लाखों श्रद्धालु यहाँ आते हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से अर्ध कुम्भ के काल में ग्रहों की स्थिति एकाग्रता तथा ध्यान साधना के लिए उत्कृष्ट होती है। हालाँकि सभी हिन्दू त्योहार समान श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाए जाते है, पर यहाँ अर्ध कुम्भ तथा कुम्भ मेले के लिए आने वाले पर्यटकों की संख्या सबसे अधिक होती है।

वरिष्ठ अनुवादक
राजभाषा विभाग
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गर्व का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।

डॉ राजेंद्र प्रसाद

चलो नहाने कुम्भ

सन्तोष कुमार विश्वकर्मा

चलो अमावस पर चलो, चलें नहाने कुम्भ।
पर्व सनातन धर्म का, चलो मनाने कुम्भ।

ठंड, कुहासा, भींड की, किसको है परवाह,
अपनी-अपनी आस्था, चलो दिखाने कुम्भ।

हो जाएंगे वायरल, बना-बना के रिल्स,
आए हैं कुछ लोग भी, कमर हिलाने कुम्भ।

ऊँच नीच दिखता नहीं, समरसता हर ओर,
चलो सनातन धर्म का, ध्वज फहराने कुम्भ।

शब्दों से नहला रहा, मैं कविकुल का दीप,
डुबकी संगम तीर पर, चलो लगाने कुम्भ।

पापों का हो प्रायश्चित, और मिले कुछ पुण्य,
'सूर्य' सभी को ले चलो, इसी बहाने कुम्भ।

लोको पायलट (गुड्स)
गोरखपुर पूर्व

मिलते जुलते रहा करो

अमित दुबे

धार वक्त की बड़ी प्रबल है,
इसमें लय से बहा करो,
जीवन कितना क्षणभंगुर है,
मिलते जुलते रहा करो।

यादों की भरपूर पोटली,
क्षणभर में न बिखर जाए,
दोस्तों की अनकही कहानी,
तुम भी थोड़ी कहा करो।

हँसते चेहरों के पीछे भी,
दर्द भरा हो सकता है,
यही सोच मन में रखकर के,
हाथ दोस्त का गहा करो।

सबके अपने-अपने दुःख हैं,
अपनी-अपनी पीड़ा है,
यारों के संग थोड़े से दुःख,
मिलजुल कर के सहा करो।

किसका साथ कहाँ तक होगा,
कौन भला कह सकता है,
मिलने के कुछ नए बहाने,
रचते-बुनते रहा करो।

मिलने जुलने से कुछ यादें,
फिर ताजा हो उठती हैं,
इसीलिए यारों नाहक भी,
मिलते जुलते रहा करो।

स्टेशन मास्टर
कछवा रोड स्टेशन

कुछ अनकहे-अधूरे पन्ने...

नीरू अवस्थी

ये मुहब्बत भी कुछ अजीब-सा जज्बा है, जिसे हो जाए उसको भी चैन नहीं और जिसे ना हो, वह भी बेचैन... लेकिन एक दिन "श्यामली" को भी मुहब्बत हो ही गयी। अब आप कहेंगे कि ये श्यामली कौन है? अरे जनाब... मेरे लेखन की श्यामवर्णीय, तीखे नाक-नक्श की नायिका, जिसका लापरवाही से बांधा गया शिथिल जूड़ा, जो उसकी सुराहीनुमा गर्दन पर ढलक रहा था, पतली उँगली में दप-दप दमकता हीरा, जो उसकी सुन्दरता को और भी चमचमा रहा था, उसके पास से आ रहा तीखे परफ्यूम का भभाका और उसकी चंचल हँसी! क्या कहा जाय, उफ!!! बिलकुल अपने नाम को ही चरितार्थ कर रही थी, तो जनाब, "श्यामली", उसे मुहब्बत हो ही गयी, मुहब्बत का शोख, चटकीला रंग उस पर चढ़ गया और वो उसी रंग में सराबोर हो गयी। जैसा कि होता आया है कि मुहब्बत में बेवजह की खुशी, फिर रह-रह के मुस्कराना-गुनगुनाना, बात-बात पर हँसाना, सब कुछ होता है। सब से ज्यादा जुबा पे मशहूर अभिनेता की फिल्म का गीत गुनगुनाने को जी करता है, ऐसा लगता, जैसे- कुछ तो हुआ है, कुछ हो गया है, वगैरह-वगैरह...

नायिका का वर्णन हो और नायक का जिक्र ना हो, तो कुछ अधूरा-सा प्रतीत होता है... "देवास" का दमदार व्यक्तित्व, अपने ही नाम को परिलक्षित करता, लंबा-चौड़ा कद, ऊँचा माथा, चमकदार गौर - वर्ण, आत्मविश्वासी, दृढ़ - निश्चयी प्रकृति का मालिक, वैसे देखा जाय तो "प्रभावशाली व्यक्तित्व" वाले लोग स्वाभाविक रूप से दृढ़-निश्चयी ही होते हैं। विविध परिस्थितयों का सामना बहुत बहादुरी से करते है, इतनी आसानी से घबराते नहीं हैं... बस ये ही गुण "देवास" का श्यामली को आकर्षित कर गया... वैसे भी तो आत्मविश्वासी लोग जिम्मेदारी उठाने का भरपूर आनन्द ही लेते हैं... लेकिन गुरु-गंभीर-स्वभाव का देवास अपनी कॉलेज टीम की मुखरता पर मंद - मंद मुस्कुराते हुए सबका मन मोह लेता... शायद, उसकी ये ही अदा अल्हड़-स्वभाव वाली श्यामली का मन मोह ले गयी।

मुहब्बत का यह जज्बा श्यामली के जीवन को सार्थक बनाता गया है, उसको लगा कि यह वह बंधन है, जो कभी आसानी से टूटेगा नहीं। यह वह ताकत है, जो हर मुश्किल को आसान बना देती है, वह उम्मीद है, जो कभी खत्म नहीं होगी... लेकिन होनी को कुछ और ही मंजूर था। अभी दोनों की मुहब्बत परवान चढ़ने ही ना पायी थी कि अचानक.... देवास के पिता का ट्रान्सफर अन्य शहर में हो गया और उसे अपना कॉलेज छोड़ कर जाना पड़ा। बिछोह का तीव्र-दर्द प्रेमी-युगल ही समझ सकता है। ऐसा लगता है कि मन लगेगा लेकिन मन लगता नहीं है।

देखा जाय, तो एक दिन आपको मुहब्बत हो जाती है और आप खुश हो जाते हैं, बेवजह यूँ ही दिन-रात मुस्कुराते हैं। फिर एक दिन आप बेचैन हो उठते हैं, ये उदासी बढ़ते-बढ़ते आपके पूरे व्यक्तित्व पर सवार हो जाती है। आपके दिन-रात उदासी की धुंध से ढक जाते हैं और ये बेवजह की काली-उदासी, मुई अवसाद बन जाती है और मिलने की खुशी निरुद्देश्य के आंसुओं में तब्दील हो जाती है। अवसाद की यह अवस्था अक्सर प्रेमी-युगल के "मूड-स्विंग" को लेकर जाहिर होती है। इन के जीवन में अपने साथी के प्रति बहुत अधिक आसक्ति या मुहब्बत इसका सर्वोच्च कारण होता है। जो किसी भी विधा चैन नहीं लेने देता और आप बेबस, बेचारे, असहाय, अकेले.... जिन्दगी के यूं अचानक करवट लेने से अचकचाए हुए से बेज़ार, तन्हा यूँ ही जिन्दगी को जीने को मजबूर हो जाते हैं।

....और फिर क्या कहा जाय, एक दिन आप रोते-गाते-मुस्कुराते खुद को खुद में ही समेटने लगते हैं, खुद से खुद को समझाते हैं, अपने से ही अपने को प्यार जताते हैं। अपनी ज़िन्दगी खुद से अपने लिए जीने का फैसला लेते हैं। विविध प्राथनाएं, मंत्र-जाप, आध्यात्म का रुख अपनाने लगते हैं, खुद से खुद के लिए जीने का ये सफर काफी लम्बा और मुश्किल प्रतीत होता है... एक लम्बा-अँधेरा रास्ता दिखाई देता है, ऐसा लगता ये ऐसा अँधेरा-सुनसान रास्ता है, जिसका कहीं कोई अन्त नहीं है... बस चलते ही जाओ, चलते ही जाओ... मन घबराने लगता है, डर लगता है, लेकिन डरते-डरते, धीरे-धीरे आगे बढते-बढ़ते इक धूमिल-सी रोशनी की किरण प्रकट होती है... और मन मजबूत होता जाता है, आंखें अभ्यस्त होती जाती है। मन पर काबू होने लगता है और ये सुदूर से आती रोशनी की धूमिल सी किरण सकारत्मकता का उदय करती है और आप सहनशीलता के साथ धीरे-धीरे आगे बढते जाते हैं। ये वो ही परिस्थिति है, जब आप धैर्य धारण करते हैं... और क्रोध, खीज जैसी "नकारत्मक-प्रवृति" से स्वयं को बचाते हैं... और फिर सुकून से ज़िन्दगी को फिर से जीने की ओर मजबूती से अग्रसर होते जाते हैं।

.....शायद, ये ही ज़िन्दगी के कुछ "अनकहे-अधूरे-पन्ने" है... जिन्हें आप व्यक्त कर के भी व्यक्त नहीं कर सकते हैं.... और ज़िन्दगी को बरबस जीने को मजबूर होते हैं और आप ये समझने लगते हैं कि आपकी खुशी आपके ही अन्दर है... कोई और आपको खुश नहीं कर सकता है, और खुश होने के लिए आपको किसी और से मुहब्बत की जरुरत नहीं है। आप उसके लिए किसी से अपेक्षा नहीं रखते हैं कि कोई आएगा और आपको खुशी देगा। आप उस घुप-अँधेरे से बाहर निकल कर "सुकून की रोशनी" की तरफ मद्धम-लय में कदम दर कदम आगे बढ़ाते जाते हैं.... क्यों है ना ये कितनी सुन्दर बात... है ना? जिस सुकून को आप जिन्दगी भर दूसरे में तलाश रहे थे, वो सुकून आपके ही अन्त:करण में समाहित था... बस आपके देखने भर की देर थी। ये सुकून और खुशी उस खुशी से ज्यादा मायने रखती है क्योकि ये हमेशा बनी रहने वाली है।

कार्यालय अधीक्षक (कार्मिक)
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

मेरी माँ

डॉ. 'ऐनुल' बरौलवी

मुझको जन्नत से अक्सर देखा करती है मेरी माँ
ख्वाबों में जाने क्या-क्या कहती रहती है मेरी माँ

मेरे सर पे हाथों को फेर, मुझे उठने को कहती
अब्बा के बारे में मुझसे कुछ कहती है मेरी माँ

भैया से मिलकर उनको अब भी समझाती रहती है
अब जन्नत के बागों में टहला करती है मेरी माँ

चुपके से आती है, घर-आँगन को महका जाती है
अब तो जन्नत की खुशबू से तर लगती है मेरी माँ

सबकी खुशियों खातिर जन्नत से रोज दुआयें करती
सब बच्चों को खुश देख बहुत ही हँसती है मेरी माँ

चाँद-सितारों के बीच अभी है एक जमाने से वो
जन्नत के ही फल खाकर अच्छी दिखती है मेरी माँ

खुशकिस्मत हैं वो जिनकी माँ जिन्दा है इस दुनिया में
जन्नत में रहती, वहीं वजीफा पढ़ती है मेरी माँ

याद मुझे है माँ की लोरी, थपकी, सब दिए खिलौने
'ऐनुल' अच्छा है अब भी दिल में रहती है मेरी माँ

सेवा निवृत्त ट्रेन मैनेजर (मेल / एक्सप्रेस)
(कवि, लेखक एवं समाजसेवी)

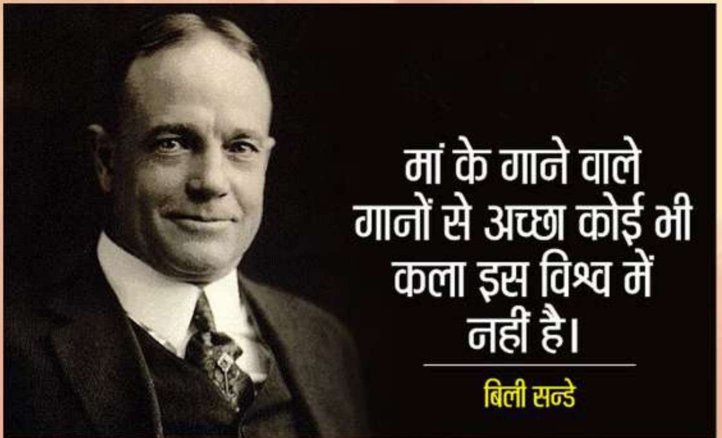

छात्रवीर

सौरभ कुमार शर्मा

यार पॉजिटिव रहा कर,
क्यों फालतू टेंशन लेता है,
इस बार न सही, अगली बार हो जायेगा.........

इतना क्या डरता है,
और भी तो असफल हुए हैं,
तू कोई अकेला नहीं है,
अगली बार ज्यादा मेहनत करना.........

ये कुछ पंक्तियाँ हैं जो आमतौर पर हमें असफल होने पर सुनने को मिलती है, पर सच्चाई तो ये है कि ये सारी बातें हमें पहले से पता है फिर भी लोग फालतू का ज्ञान देने चले आते हैं। मेरा दर्द कोई नहीं समझता या फिर शायद समझने की कोशिश ही नहीं करता।

मेरे अंदर क्या चल रहा है ये सिर्फ मैं जानता हूँ। कितनी बार टूटा हूँ, कितनी बार खुद को संजोया है, ये सिर्फ मैं ही जानता हूँ। रातों की नींद कैसे खोया हूँ ये शायद मेरे गीले तकियों के अलावा और कोई नहीं जानता। बाहर 'हाँ' में 'हाँ' मिला दिया करता हूँ लेकिन मैं ये भी जानता हूँ कि आप मुझे समझ नहीं रहे हैं और शायद समझ भी नहीं पाएंगे, क्योंकि मैं और आप अलग हैं, बिल्कुल अलग।

कितनी भी कोशिश करूँ, खुद को समझाने की, कि यह कुछ समय के लिए है, बाद में ठीक हो जायेगा, पर अब इन किताबी बातों का मुझपर कोई असर नहीं होता। अब तो ऐसा लगता है कि उदासी परमानेंट सी हो गई है और डिप्रेशन तो मानो मेरा घर ही है।

कौन समझता है किसी को, अब तो किसी को अपनी बातें बताना भी नहीं चाहता और बताऊँ भी तो किसे बताऊँ, है कोई समझने वाला? इस 8 बिलियन की आबादी में एक इंसान भी मिलना मुश्किल हो जाता है। खैर, जब माँ बाप ही नहीं समझ पा रहे तो किसी और से क्या ही उम्मीद करूँ।

मैं मैं हूँ, कोई और नहीं। जैसा भी हूँ, मैं ही हूँ, कोई और नहीं हो सकता। ऐसा नहीं कि मैं प्रयास नहीं करता। मैं आप से कम हो सकता हूँ पर हर रोज खुद से ज्यादा होता हूँ।

मुझे अपनी कमियों को स्वीकारना होगा। मुझे समझना होगा की असफल होना ठीक है, अपनी कमियों के लिए शर्मिंदा होने की कोई जरूरत नहीं है। मुझे ये समझना होगा की बिल्ली कभी शेर नहीं बन सकती पर सभी बिल्लियों में सबसे अच्छी जरूर हो सकती है।

मुझे नहीं चाहिए आपकी मदद, आपकी वो नजर जो मुझे असफल, निकम्मा और तुच्छ समझती है। मुझे नहीं चाहिए आपकी राय, सांत्वना या दिखावटी प्यार। अपनी तरस भरी निगाहें अपने पास ही रखो, मुझे मैं ही रहने दो।

मैं खुद को खुद ही सम्भाल लूँगा।

काँटावाला
दीदारगंज रोड

जिंदगी

अदिति

कल एक झलक जिंदगी को देखा,
वह राहों पर मेरी गुनगुना रही थी।
फिर ढूँढा उसे इधर-उधर,
वह आँख-मिचोली कर मुस्कुरा रही थी।
एक अरसे के बाद आया मुझे करार,
वह सहला कर मुझे सुला रही थी।
हम दोनों क्यों खफा हैं एक-दूसरे से
मैं उसे और वह मुझे समझा रही थी।
मैंने पूछ लिया - क्यूँ इतना दर्द दिया कमबख्त तूने,
वह हँसी और बोली - मैं जिंदगी हूं पगली
तूझे जीना सिखा रही थी।

कक्षा - VI
पुत्री - पूनम कुमारी
व. अ. अ / लेखा

मौत

पूनम कुमारी

जब तक अकेला था,
किसी ने नहीं अपनाया।
आज जब मौत ने है गले लगाया,
तो हर कोई हाल पूछने है आया।
एक वक्त के लिए कोई नहीं समझ पाया,
अब हर इंसान है मुझे जान पाया।

जागा था जब तक,
नहीं किसी ने साथ निभाया।
सो गया हूं जब हमेशा के लिए,
अब हर कोई है मिलने आया।

हँसा नहीं था जो कभी साथ में,
आज वो हर शख्स है मेरे लिए रोने आया।
मौत ने है दिखलाया,
तू अकेला था,
मगर अकेला नहीं तेरा ये बेजान साया।
अकेला नहीं है ये बिन शरीर का साया।

वरिष्ठ अनुभाग अधिकारी / लेखा
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

होली की पुकार

सोनू कुमार

एक प्रेम की तरंग हूं,
लोगों के मैं संग हूं,
विश्वास की एक टोली हूं,
मैं रंग बिरंगी होली हूं।।

फागुन मास की बसंत बयार,
लुटाती है सब पर ये प्यार,
सब एक दूजे से घुल मिल जाते,
दुश्मन भी दुश्मनी को भूल जाते,
पावन पर्व की एक रंगोली हूं,
मैं रंग बिरंगी होली हूं।।

आज कल होली का माहौल बिगड़ गया,
पुरानी परम्परा हमसे छीन गया,
पवित्र पर्व को नशे से क्यों जोड़े,
आओ अश्लीलता के धागे को तोड़े,
भारतीय संस्कृति की मैं भोली हूं,
मैं रंग बिरंगी होली हूं।
मैं रंग बिरंगी होली हूं।।

सहायक (सी / डब्लू), यांत्रिक
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

अपना-अपना कुंभ

पल्लवी

क्या आप कुंभ गये हैं? बेशक गये होंगे। टेलीविजन पर लगातार दर्शायी जा रही कुंभ की व्यापकता, दिव्यता, भव्यता, विशालता और 144 वर्षों बाद प्राप्त होने वाला दुर्लभ संयोग आपको सहज ही आकर्षित कर लिया होगा। और अगर आप इस महाकुंभ में न जा पाये होंगे तो मन में एक टीस ज़रूर होगी। इस महाकुंभ में आस्था की डुबकी लगाने के सबके अपने-अपने मायने होंगे और अपने-अपने अनुभव। मैं भी अपना अनुभव आप सबके साथ साझा करना चाहती हूं।

कुंभ जब प्रारंभ हुआ, ठंड का मौसम भी अपने चरम पर था। पर जन सैलाब में कहीं कोई कमी नहीं थी। आस्थावान श्रद्धालुओं की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही थी। टेलीविजन पर चौबीसों घंटे सातों दिन लगातार लाइव कवरेज जैसे हमें कह रहा हो कि हम वहां क्यों नहीं हैं? इंस्टाग्राम और फेसबुक पर मित्रगणों की तस्वीरें भी जैसे मुंह चिढ़ा रही थीं। अरे, तुम अभी तक कुंभ नहीं गयी। अथाह भीड़ और परेशानियों के डर पर विजय प्राप्त करते हुए अंततः माँ को कुंभ जाने के लिए मना ही लिया। शनिवार की रात को हमलोग झूंसी/प्रयागराज के लिए प्रस्थान किये। बनारस रेलवे स्टेशन पर भीड़ को देखकर एकबारगी तो लगा, ट्रेन में अपनी सीट तक पहुंच भी पायेंगे या नहीं। किंतु ट्रेन अटेंडेंट ने सतर्कता दिखाई और ऊँची आवाज में डांटते हुए भीड़ को आगे बढ़ाया। ट्रेन अटेंडेंट की मदद से हम अपनी सीट तक पहुंचे और हमने अपना स्थान ग्रहण किया। थोड़ी ही देर बाद कुछ विदेशी (महिला/पुरुष) मेहमान हमारे पास आकर रूक गये। भीड़ की वजह से आगे नहीं जा पा रहे थे या सीट कन्फर्म नहीं थी। मां के एकदम पास खड़ी विदेशी महिला को माँ ने तुरंत अपनी सीट उन्हें ऑफर किया और उतनी ही शालीनता से उन्होंने सधन्यवाद उसे स्वीकार किया। उन्होंने मेरी छोटी बहन अदिति को पुचकारा। फिर दोनों के बीच बातचीत शुरू हो गई। वह अदिति की इंग्लिश उच्चारण से काफी प्रभावित हुईं। बातचीत में पता ही नहीं चला कब हम अपने गन्तव्य तक पहुंच गये। जब हमलोग ट्रेन से उतरने के लिए खड़े हुए तो विदेशी महिला ने अदिति को कम्प्लीटमेंट दिया, "अरे, तुम तो काफी लंबी हो, मॉडल बन सकती हो।" अदिति खुश हो गई। हमने उन्हें बाय कहा और ट्रेन से उतर गये। पौने दो बजे का समय था पर किसी की आंखों में नींद नहीं थी। भीड़ एक निश्चित दिशा की ओर चल पड़ी। सभी के पैरों में जैसे फूर्ति भरी थी। क्या बच्चे, क्या बुजुर्ग सभी बस चले जा रहे थे। जल्दी ऐसी कि न तो कोई वाहन को ताक रहा है, न ही इंतजार कर रहा है। रास्ते चकाचक रोशनी से भरे हुए थे। चाय-पानी की दुकानें खुली थीं। करीब साढ़े तीन किलोमीटर का सफर था। सभी उत्साह से भरे थे। कुछ महिलाओं ने तो गीत गाना भी शुरू कर दिया था, "हे गंगा मइया....।"

इस तरह कारवां बढ़ चला। सभी टोलियां एक-दूसरे का हाथ थामे चले जा रहे थे। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ रहे थे, हमारी खुशी और उत्साह भी बढ़ता जा रहा था। एक जगह कुछ महिलाएं खड़ी थीं। परदे की तरह कपड़ा एक सिरे से दूसरे सिरे तक बंधा था। ओह, यह तो महिलाओं के लिए यूरिनल की तात्कालिक व्यवस्था थी। यह सरकारी व्यवस्था नहीं थी बल्कि आसपास की दुकानों में कार्यरत महिलाओं की सहज बुद्धिमत्ता का परिचय था, जिसने मुझे अचरज से भर दिया था। शायद इसीलिए कहा गया है कि यात्रा करनी चाहिए। यह न केवल आपको जीवन के एक अलग स्तर तक ले जाती है बल्कि आपकी सहज बुद्धि का विकास भी करती है। एक-दूसरे का हाथ थामे कब हम मेला क्षेत्र पहुंच गए पता ही नहीं चला। जैसे-जैसे हम मेला क्षेत्र में आगे बढ़ते गये, अखाड़ों के आकर्षक पंडालों की भव्यता ने हमारा मन मोह लिया। एक कसक मन में उठी, काश, हम पहले आये होते तो इन अखाड़ों की दिव्यता को आत्मसात् कर पाते। इन अखाड़ों के सूने पंडाल हमें बता रहे थे कि हम उस अलौकिक सौन्दर्य की अनुभूति और आशीर्वाद से वंचित रह गये जो हमें उन अखाड़ों में विराजमान साधु-संतों के सानिध्य में प्राप्त होता, जो अन्यथा उपलब्ध नहीं। सूने पंडाल हमें अगले कुंभ का आमंत्रण दे रहे थे जिसे हमने सहर्ष स्वीकार कर लिया। अब हमलोग उस स्थान तक पहुँच चुके थे जहां से पीपा पुल पार कर डुबकी लगानी थी। अभी साढ़े तीन बजे थे। माँ और नानी मां ने थोड़ी देर विश्राम करना चाहा। स्नान से पहले नित्य क्रिया से भी मुक्त होना था। अमूमन भीड़-भाड़ वाले क्षेत्र में सुलभ शौचालय आपको व्यथित करते हैं। किंतु वहां यह देखकर बहुत सुकुन मिला कि कई व्यक्ति शौचालय के पास मुस्तैद मिले जो तुरंत शौचालय साफ कर देते और बाल्टी में पानी भरकर रख देते। इतनी साफ-सफाई, वह भी मुफ्त में। इतनी बढ़िया सरकारी व्यवस्था। आपकी मर्जी हो तो 10 रुपये दे दीजिए चाय-पानी के लिए।

अब हमलोग आगे बढ़े। हमें 9 नंबर और 10 नंबर पीपा पुल से जाने का निर्देश प्राप्त हुआ था। पुल से गुजरते हुए जब माँ गंगा को स्पर्श कर ठंडी हवा हमारे चेहरे को छू रही थी, उस नैसर्गिक आनंद को शब्दों में बयां करना संभव नहीं है। कल्पवास का महात्म्य अब मेरी समझ में आ रहा था। नैसर्गिक आनंद में गोते लगाते हुए हम दूसरी तरफ पहुंच चुके थे। स्नान क्षेत्र में चारों तरफ पुलिस को मुस्तैद पाया। सायरन पर लगातार घोषणा हो रही थी, "स्नानार्थी कृपया रुके नहीं। स्नान करके मेला क्षेत्र खाली करें। भीड़ का दबाव बढ़ सकता है।" पुलिस भी मुस्तैदी से सभी स्नानार्थियों को निर्देश दे रही थी। सहयोग भी कर रही थी और उनकी भाषा भी संतुलित थी। अच्छा लगा। अपनी जिम्मेदारी समझते हुए हमने भी तत्काल अपना स्थान सुरक्षित कर लिया।

अब बारी थी मां गंगे से एकाकार होने की। हमने मां गंगा को प्रणाम किया, क्षमायाचना की, उनसे अनुमति ली, फिर गंगा में प्रवेश किया। कौतूहल और रोमांच से भरपूर अवर्णनीय अनुभूति। नानी मां ने गिनगिन कर डुबकी लगवाया। तृप्त होकर हम सब बाहर आए। हमने मां गंगा को पुष्प अर्पित किय। पूजा-अर्चना की। आशीर्वाद लिया। अब डुबकी लगाने की बारी पापा की थी।

मां गंगा से आशीर्वाद लेकर हम वापस चले। रोली-चंदन लिये पंडित जी दिखाई दिए तो हम सबने टीका लगवाया । नानी मां ने हम सबसे दान करवाया। अब हमारी पूजा संपन्न हुई। आगे बढ़े तो एक स्थान पर नागा साधू आशीर्वाद देते दिखाई दिये। हमने उनसे आशीर्वाद लिया। नानी मां की आस पूरी हुई।

तृप्ति, संतुष्टि और आभार सहित एक बार फिर मां गंगा को प्रणाम कर हमने मेला क्षेत्र से प्रस्थान किया। बिना समय गंवाये पापा ने ऑटो रिजर्व किया और हम फटाफट रेलवे स्टेशन पहुँच गये। स्टेशन के इंट्री गेट पर पुलिस ने जब हमें आधे-पौने घंटे रोक लिया तो हमें एकबार फिर चाय-नाश्ते का अवसर प्राप्त हो गया। आगे निर्देशानुसार जब हमने स्टेशन परिसर में प्रवेश किया तो वहां ट्रेन की उपलब्धता के अनुसार ही यात्रियों को आगे बढ़ने दिया जा रहा था। तब तक यात्रिगणों को स्टेशन परिसर में ही लाइन में प्रतीक्षारत रहना था। प्लेटफार्म पर ठहरने की इजाजत नहीं थी। सीधे ट्रेन में ही चढ़ना था। रेलवे की यह व्यवस्था भी सुकून भरी लगी। पर असली चुनौती ट्रेन में चढ़ना नहीं बल्कि ट्रेन में बैठने की जगह मिलनी थी। लोकल ट्रेन प्लेटफार्म पर खड़ी थी। आरपीएफ के सहयोग से हम प्लेटफार्म तक पहुंचे। मां ने क्षण भर भी गंवाये बिना इंजन से सटे विकलांग बोगी में चढ़ने का निर्णय ले लिया, हमसब भी उनके पीछे-पीछे हो लिये। सतर्कता बरतते हुए मां ने झटपट न्यूजपेपर बिछाया और हम सबने अपना-अपना स्थान ग्रहण कर लिया। करीब डेढ़ घंटे बाद जब ट्रेन ने प्रस्थान के लिए हॉर्न बजाया तब राहत की सांस आई। बनारस स्टेशन पर उतरने के बाद जब अन्य बोगियों में यात्रियों की स्थिति देखी तब जाकर मां की सतर्कता और सूझबूझ पर फख्र हुआ जिन्होंने हमारी वापसी यात्रा को न केवल सहज बल्कि आरामदायक भी बना दिया था। ट्रेन पर खाते-पीते और सोते हम अपने गंतव्य तक पहुंच गये थे, बड़े आराम से।

तो यह थी हमारी कुंभ यात्रा। उं हूं... मेरी पहली कुंभ यात्रा। उम्मीद है आपको भी आनन्द आया होगा।

कक्षा - 12
पुत्री - पूनम कुमारी
वरि. अनु. अधि. / लेखा

वो सपना मेरा

अमित कुमार साव

जिन्दगी ने कुछ यूं सितम ढाए,
जो भी थे अपने, हुए पराए।

एक मीठा फल कैसे कड़वा हो जाता है,
हाय! ये वक्त क्यूं इतना सितम ढाता है।

कुछ है बाकी, जो बेरंग होने नहीं देता मुझे,
वो इत्र की खुशबू-सा महकता रहता मुझमें।

वो रात में भी सवेरे-सा एहसास कराता है,
वो सोने नहीं देता, नींद में भी जगाता है।

वो सपना मेरा, बस मेरा है,
जिसे छीन नहीं सकता ये ज़माना,
उसे पूरा है करना हर हाल में
यही मैंने जाना, यही मैंने ठाना ।।

वरिष्ठ अनुवादक
राजभाषा विभाग
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

कलाकार

नीरू अवस्थी

अब क्या बोलूं?
अपने मन का आपा कैसे खोलूं?
कि मैं, तो हमेशा से अभिनय जगत मे जाना चाहती थी....
युवावस्था में, आया था एक-बावला-सा-निदेशक -
देख, मेरा "दमदार-अभिनय"...
बोला... मेरे पापा से क्यों ना बना दे?
इसको भी एक कलाकार.....
मेरे पापा भी किसी अभिनेता से कम नहीं....
तपाक से बोले, क्यों नहीं, जब आप कहें.....

अब क्या बोलूं?
अपने मन का आपा कैसे खोलूं?
कि मैं, तो हमेशा अभिनय जगत मे जाना चाहती थी....
सुना है कि "अभिनय का जादू" सर चढ़ के बोलता है...
काश! आता मुझे भी, कुछ "जादू-वादू"
तो, बरबस मनवा लेती, अपने दिल की बात...
जो मेरे बिना कहे जान लेते थे,
उस दिन, ना जाने क्यों?
नहीं जानी उन्होंने, मेरे दिल की बात....

अब क्या बोलूं?
अपने मन का आपा कैसे खोलूं?
कि मैं, तो हमेशा से अभिनय जगत मे जाना चाहती थी...
वैसे, "संयत-अभिनय" तो आज भी बेहतरीन करती हूँ....
उच्च-कोटि के "सांकेतिक-संवाद" से लगभग अभिभूत होती हूँ -
और तब "मुखर-प्रक्षेपण" की क्षमता को अक्सर प्रकट करती हूँ....
अपने "जीवंत-व्यवहार" में यदा-कदा परिलक्षित भी करती हूँ....
परदे से परे "उत्कृष्ट-अभिनय" करती हूँ....

तो क्यों ना अब मैं अपने मन का आपा खोलूं...
और अब ये बोलूं कि....
करती हूँ मैं "अनुकरणात्मक-विधा" का "सात्विक अभिनय"
क्योकि अब "मैं एक कलाकार बन गयी हूँ".....

कार्यालय अधीक्षक (कार्मिक)
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

महिला सशक्तीकरण की ओर एक कदम

दिव्या शर्मा

वर्ष 2025 लैंगिक समानता और महिला सशक्तीकरण के वैश्विक प्रयास में एक निर्णायक क्षण है, क्योंकि यह बीजिंग घोषणा और कार्रवाई के मंच की 30वीं वर्षगांठ का प्रतीक है। 1995 में चीन के बीजिंग में महिलाओं पर चौथे विश्व सम्मेलन में 189 सरकारों द्वारा अपनाया गया बीजिंग घोषणा और कार्रवाई का मंच दुनिया भर में महिलाओं और लड़कियों के अधिकारों के लिए सबसे प्रगतिशील और व्यापक रूप से समर्थित खाका बना हुआ है। मंच नीतियों, कार्यक्रमों और निवेश का मार्गदर्शन करता है जो हमारे जीवन के महत्वपूर्ण क्षेत्रों को प्रभावित करते हैं, जैसे- शिक्षा, स्वास्थ्य, शांति, मीडिया, राजनीतिक भागीदारी, आर्थिक सशक्तीकरण और महिलाओं और लड़कियों के खिलाफ हिंसा का उन्मूलन। जलवायु न्याय और डिजिटल प्रौद्योगिकियों की शक्ति के आसपास उभरती प्राथमिकताओं के साथ-साथ इन मुद्दों को संबोधित करना अत्यावश्यक है, क्योंकि सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए केवल पांच वर्ष शेष हैं। बीजिंग घोषणापत्र और कार्रवाई मंच की 30वीं वर्षगांठ भी बढ़ती असुरक्षा और बढ़ते संकटों, लोकतंत्र में घटते भरोसे और सिकुड़ते नागरिक स्थान के बीच मनाई जा रही है।

पिछले साल ही, 612 मिलियन महिलाएं और लड़कियां सशस्त्र संघर्ष की क्रूर वास्तविकताओं के बीच रहीं, जो कि सिर्फ एक दशक में 50 प्रतिशत की चिंताजनक वृद्धि है।

बीजिंग घोषणापत्र और कार्रवाई मंच, "सभी महिलाओं और लड़कियों के लिए" की 30वीं वर्षगांठ के अवसर पर संयुक्त राष्ट्र महिला के वैश्विक अभियान के बैनर तले, इस वर्ष का अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस तीन प्रमुख क्षेत्रों में कार्रवाई करने का आह्वान है:

महिलाओं और लड़कियों के अधिकारों को आगे बढ़ाना : महिलाओं और लड़कियों के संपूर्ण मानवाधिकारों के लिए अथक संघर्ष करना, सभी प्रकार की हिंसा, भेदभाव और शोषण को चुनौती देना।

लैंगिक समानता को बढ़ावा देना : प्रणालीगत बाधाओं को दूर करना, पितृसत्ता को खत्म करना, गहरी असमानताओं को बदलना, तथा समावेशिता और सशक्तीकरण सुनिश्चित करने के लिए युवा लोगों सहित हाशिए पर पड़ी महिलाओं और लड़कियों की आवाज को बुलंद करना।

सशक्तिकरण को बढ़ावा दें : शिक्षा, रोजगार, नेतृत्व और निर्णय लेने के स्थानों तक समावेशी पहुँच सुनिश्चित करके सत्ता संरचनाओं को फिर से परिभाषित करें। युवा महिलाओं और लड़कियों को नेतृत्व और नवाचार करने के अवसरों को प्राथमिकता दें।

अपने समुदायों में कार्रवाई करने के लिए मीडिया, कॉर्पोरेट नेताओं, सरकारों, सामुदायिक नेताओं, नागरिक समाज और युवाओं तथा अन्य प्रभावशाली लोगों को शामिल करें। नेताओं से कार्रवाई करने और महिलाओं के अधिकारों तथा लैंगिक समानता को बढ़ावा देने में निवेश करने के लिए कहें। संवाद को बढ़ावा देने और कार्रवाई को प्रेरित करने के लिए हैशटैग #ForAllWomenAndGirl का उपयोग करके डिजिटल प्लेटफॉर्म पर अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की कहानियाँ और संदेश साझा करें।

हम सब मिलकर लैंगिक समानता प्राप्त करने के लिए इस अंतर को पाटने वाली पीढ़ी बन सकते हैं।

बीजिंग घोषणापत्र और कार्रवाई मंच ने महिला अधिकारों के एजेंडे को बदल दिया।

कानूनी संरक्षण : 1995 से पहले, केवल 12 देशों में घरेलू हिंसा के खिलाफ कानूनी प्रतिबंध थे। आज, 193 देशों में 1,583 विधायी उपाय लागू हैं, जिनमें से 354 विशेष रूप से घरेलू हिंसा को लक्षित करते हैं। ये कानून दुर्व्यवहार और दंड से बचने को सहन करने से सामूहिक इनकार का प्रतिनिधित्व करते हैं।

सेवाओं तक पहुँच : बीजिंग प्लेटफॉर्म फॉर एक्शन ने हिंसा से बचे लोगों के लिए आश्रय, कानूनी सहायता, परामर्श और स्वास्थ्य सेवा जैसी आवश्यक सेवाओं की मांग की। इन सेवाओं का वैश्विक स्तर पर विस्तार हुआ है, जिससे अनगिनत महिलाओं और लड़कियों को महत्वपूर्ण जीवन रेखाएँ मिली हैं।

युवा सहभागिता : बीजिंग एजेंडे ने युवा नारीवादियों की एक नई लहर को प्रेरित किया है जो अब लैंगिक न्याय के लिए आंदोलनों को आकार दे रहे हैं, डिजिटल प्लेटफार्मों का लाभ उठा रहे हैं, और समानता के लिए सक्रियता को बढ़ावा दे रहे हैं।

बदलते सामाजिक मानदंड : महिलाओं पर चौथे विश्व सम्मेलन में अपनाए गए समझौते ने दुनिया भर में महिला अधिकार आंदोलनों को प्रज्वलित किया, हानिकारक रूढ़ियों, विचारों और प्रथाओं को चुनौती दी और लैंगिक समानता नीतियों, कानूनों और संस्थानों के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

शांति में महिलाओं की भागीदारी : बीजिंग प्लेटफॉर्म फॉर एक्शन ने संघर्ष समाधान और रोकथाम के सभी स्तरों पर महिलाओं की पूर्ण और समान भागीदारी बढ़ाने की आवश्यकता पर जोर दिया, जिसमें निर्णय लेने का स्तर भी शामिल है। आज, महिलाओं, शांति और सुरक्षा पर राष्ट्रीय कार्य योजना वाले 112 देश हैं- 2010 में केवल 19 से एक महत्वपूर्ण वृद्धि। ये राष्ट्रीय कार्य योजनाएँ शांति स्थापना और संघर्ष के बाद की बहाली में महिलाओं की भागीदारी को सुविधाजनक बनाने, निर्णय लेने वाले पदों तक उनकी पहुँच को सक्षम करने और संघर्ष में यौन हिंसा को संबोधित करने के लिए नए कानूनों का मार्ग प्रशस्त करने में महत्वपूर्ण रही हैं।

कनिष्ठ अनुवादक
राजभाषा विभाग
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

मीठी बोली कड़वी बोली

संजय कुमार गुप्ता

"ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोये।
औरन को शीतल करे, आपहू शीतल होय।।"

उपरोक्त सुकोक्ति को प्रेरणा मानकर यह कहानी वाणी की महता पर आधारित है कि कैसे मीठी वाणी के संसर्ग से एक साधारण व्यक्ति भी आसमान छू सकता है और कड़वी बोली से आघात पाया प्रतिष्ठित व्यक्ति भी गर्त के दलदल में जा फंसता है।

प्रभास व सात्विक ऐसे दो दोस्तों की कहानी है जो स्कूल से लेकर कॉलेज तक सदा साथ रहे। दोनों की अटूट दोस्ती सदा दूसरों के लिए मिसाल पेश करती थी। दोनों में आगे निकलने की एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा लगी रहती थी। स्कूल से लेकर कॉलेज तक सात्विक ने भरसक प्रथम आने का प्रयास किया पर सदा वह प्रभास से पीछे होकर दूसरे नंबर पर रह जाता था। इससे वह निराश आवश्यक होता पर कहीं ना कहीं अपनी गलती भी स्वीकारता। प्रभास भी उसे सदा प्रोत्साहित करता की सात्विक एक नए दिन तुम मुझसे आगे अवश्य निकलोगे। देखते-देखते कॉलेज के दिन खत्म हुए। अब वह दोनों सर्विस पाने के लिए प्रयत्नशील थे। प्रभास को बहुत जल्दी सफलता मिल गई। वह एक प्रतिष्ठित मल्टीनेशनल कंपनी में महत्वपूर्ण पद पर पद स्थापित हो गया। उसने अपने हुनर से जल्द ही वह सब कुछ प्राप्त कर लिया जो एक स्वप्न सा हो। बंगला गाड़ी और वह सभी एशो-आराम की चीजें जो समाज में प्रतिष्ठा दिलाने के लिए पर्याप्त होती हैं।

दूसरी तरफ सात्विक का भाग्य भी उसके साथ आंख मिचोली खेल रहा था। काफी संघर्ष के बाद उसे सफलता तो मिली पर साधारण सरकारी नौकरी में। कुछ समय पश्चात उनके जीवन में वह पल भी आया जो अपनी-अपनी जीवन संगिनी सन्ग जन्म जन्मांतर तक साथ निभाने के वचन के साथ अपने पारिवारिक जीवन के अटूट बंधन में बंध गए। नव वर-वधुओं का दांपत्य जीवन जहां आत्मिक सुख की चरम सीमा प्रदान कर रहा था। वही उनके भावी जीवन की आधारशिला भी तय कर रहा था। स्त्री का घर में प्रवेश जहां उसकी संस्कारों से सुख-समृद्धि लाता है वहीं उसके दुर्गुणों से घर में क्लेश व दुर्भिक्षता का बुलावा भी लाते हैं। भाग्य का पहिया कभी भी किसी को ऊपर तो कभी किसी को नीचे पटकने का नित्य अवसर ढूंढता रहता है।

सात्विक को अभिलाषा जैसी तो सुसंस्कृत और उर्जावान व अपनी बोली से सदा मिश्री जैसी मिठास घोलती बोल से सर्वगुण संपन्न पत्नी पाकर गर्व का अनुभव कर रहा था। वह जब कभी पीछे मुड़कर देखता तो उसे सदा यह बात कचोटती कि वह कभी पहले पायदान पर नहीं आ सका, जो उसके मन के किसी कोने में कुंठा मार कर बैठी थी। इस बात का अभिलाषा को एहसास हुआ तो वह उसे प्रोत्साहित करती व हमेशा सच्चे दिल से अपने ऊपर विश्वास रखकर कर्तव्य करने की सलाह देती। सात्विक अपनी असंतुष्ट महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए अपने सपनों को उड़ान देने की कोशिश करने लगा। उसका कर्म व अभिलाषा का अटूट विश्वास उसके जीवन में भाग्योदय लेकर आया। राज्य लोक सेवा आयोग की परीक्षा में टॉपर आकर उसने सिद्ध कर दिया कि, मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता स्वयं है।

इसी प्रकार प्रभास के भाग्य का पहिया ऊपर से नीचे की ओर खिसकने लगा था। उसकी धर्मपत्नी नीरा सदा उसे अपने दंभ व कड़वे बोल से अपमानित करती। उसने प्रभास के सारे

हुनर व ऊर्जा को महत्व न देकर उसमें हीनता का भाव भरने का कार्य किया। यही कारण था कि वह कर्महीन होता चला गया। धीरे-धीरे वह पतन के रास्ते पर चल दिया था। जब भी वह अपने को निराशा के भंवर जाल से निकलने की कोशिश करता, नीरा के जबान से निकले कर्कश व कड़वे बोल उसे और दलदल में डुबोते जाते। उनका पारिवारिक जीवन भी दोराहे पर आकर टूटने की प्रतीक्षा कर रहा था। प्रभास की कंपनी ने उसका अवनति का मामूली पद पर ला दिया था। इतना ही नहीं उसे एक माह की मोहलत दी गई कि ,यदि उसने अपनी कार्यक्षमता में सुधार नहीं किया तो नौकरी भी गवानी पड़ेगी। इन्हीं दुविधाओं से उतरता चढ़ता सोच में डूबा सड़क पार कर रहा था कि, अचानक उसकी तरफ तेज गति से अआती कार ने अचानक ब्रेक लगाया। कार की ब्रेक लगाने वाला और कोई नहीं बल्कि सात्विक था। उसने बाहर झांक कर देखा तो प्रभास को फौरन पहचान गया। उसे दीन-हीन अवस्था दाढ़ी बढे हुए, जैसे-तैसे कपड़ों में देखकर उसे यकीन नहीं हो रहा था कि उसका वही टॉपर दोस्त है जिससे प्रेरणा ले लेकर आज वह इस मुकाम पर पहुंचा था। उसने सहारा देकर प्रभास को गाड़ी में बिठाया तथा अपने घर ले गया। सात्विक को आज खुशी का ठिकाना नहीं था। अभिलाषा - अभिलाषा, आवाज लगता हुआ 'देखो तो कौन आया, है मेरा जिगरी यार।' उनकी परस्पर मुलाकात की औपचारिकता पूरी करने के बाद, सात्विक के मन में प्रभास के प्रति कई प्रश्नों का बवंडर उठ रहे थे। 'यार तुमने यह क्या हाल बना रखा है?' कहां गया लीडिंग कंपनी का वह स्मार्ट सीईओ, कल का टॉपर आज इस साल में क्यों? प्रभास ने उसके प्रश्नों को टालते हुए, छोड़ ना यार इन सब बातों को, बता तेरी लाइफ कैसी चल रही है? अरे! हां मैंने अखबार में टॉपर सात्विक के बारे में पढ़ा था। तुझसे मैं ना कहता था एक न एक दिन तू अवश्य सबसे आगे निकल जाओगे। अरे! नहीं यार मैं तो सदा दूसरे नंबर पर आने वाला सात्विक ही था, पर मेरी सफलता के पीछे अगर कोई है तो वह बस मेरी अभिलाषा। यदि वह मेरी जिंदगी में न आती तो शायद मेरी जिंदगी यूं ही घिसटते दोयम दर्जे में कट रही होती। तभी पीछे से अभिलाषा की मिठास घोलते बोल फूट पड़े, 'सारी बातें आज ही कर लेंगे क्या, टेबल पर भोजन की थाली आप लोगों की प्रतीक्षा कर रही है।' प्रभास जितनी देर रहा, अभिलाषा के व्यक्तित्व व मधुर वाणी से प्रभावित हो गदगद हो उठा। सात्विक के प्रति जताते उसके निश्छल प्रेम व उसको देते सम्मान ने उसकी आंखों में नमी ला दी थी। अब वह भली भांति सात्विक की सफलता का राज समझ चुका था। अब वह जल्द से जल्द वहां से निकलना चाहता था क्योंकि सात्विक के सवाल उसके हृदय को छलनी करने को तैयार थे और उत्तर में उसके पास शुन्य के अलावा कुछ बताने को नहीं था। अभिलाषा ने विदाई देते हुए प्रभास से कहा कि 'भाभी जी को लेकर कभी आइए ना घर पर' वह इस औपचारिकता का क्या जवाब दे, किंकर्तव्यविमूढ़ सा सोचता रह गया। दोनों हाथों को जोड़ अभिवादन कर अपने घर की ओर यह सोचता हुआ चल दिया कि, हे! ईश्वर अभिलाषा की वाणी से थोड़ी मिठास नीरा को दी होती तो उसकी यूं दूर्दशा न होती।

मुख्य नियंत्रक
वाराणसी कंट्रोल
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

मन के किनारे

ममता यादव

एकबार एक साधु एक गाँव के पास ठहरे, उन्हें प्यास लगी थी। उन्होंने अपने एक शिष्य को पानी लाने को भेजा। वह पानी लेने गया, परन्तु जिस नदी से पानी लाना था, उसमे से तुरंत बैलगाड़ियाँ निकल कर गयी थी, जिस कारण उसमें कचरा और मिट्टी ऊपर तैर रही थी। यह देख वह शिष्य खाली हाथ वापस लौट आया और उसने कहा, "पानी लाना तो संभव नहीं गुरु जी, क्योंकि पानी एकदम गन्दा हो गया है। अब मैं क्या करूँ, कैसे उस पानी को ठीक करूं? जब पानी को साफ करने के लिए मैं अन्दर गया तो पानी और भी ज्यादा गन्दा हो गया।"

इस पर उस साधु ने कहा- "कुछ पल किनारे बैठ जाना चाहिए था और चुप चाप बैठे रहना था। अपने आप धूल के कण नीचे बैठ जाते। तैरते हुए पत्ते बैठ जाते। वह जो जल एकदम गन्दा हो गया था, वो निर्मल हो जाता। जाओ किनारे बैठ जाओ और कुछ भी मत करना। तुम कुछ भी किए तो पानी फिर से गन्दा हो जायेगा।"

वह युवक गया और किनारे बैठ गया। गन्दा पानी बहता गया, उठी हुई कीचड़ नीचे बैठती गयी। सूखे पत्ते बहते चले गए, थोड़ी देर में देखते-देखते वह हैरान हो गया, वह पानी जो बिलकुल गन्दा था, एकदम निर्मल हो गया था। वह पानी भर कर नाचता हुआ वापस लौटा और उस साधु के चरणों में गिर पड़ा। उसने कहा, "पानी तो ठीक, परंतु मन के संबंध में भी एक बात समझ में आ गई। यह जो सारा उपद्रव मन का है, कही किनारे हम बैठ जाएं तो ठीक हो जाए।"

मन के किनारे बैठ जाने का नाम विश्राम है। चलने दें मन को और किनारे बैठ जाएं। तनाव अपने आप विसर्जित हो जायेंगे।

वरिष्ठ अनुवादक
राजभाषा विभाग
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

2025
पूर्वोत्तर रेलवे
वाराणसी
मंडल
nerailwaygkp
nerailwaygkp
n.e.railwaygkp
@nerailwaygkp
www.ner.indianrailways.gov.in

चलो कुम्भ चलें
महाकुम्भ प्रयागराज 2025
पूर्वोत्तर रेलवे
NORTH EASTERN RAILWAY
2025

2025

जनवरी JANUARY

रवि SUN	सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरू THU	शुक्र FRI	शनि SAT
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

2024 दिसम्बर DECEMBER

रवि SUN	सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरू THU	शुक्र FRI	शनि SAT
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

2025 फरवरी FEBRUARY

रवि SUN	सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरू THU	शुक्र FRI	शनि SAT
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	

पूर्वोत्तर रेलवे
NORTH EASTERN RAILWAY

2025

फरवरी FEBRUARY

रवि SUN	सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरू THU	शुक्र FRI	शनि SAT
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	

2025 जनवरी JANUARY

रवि SUN	सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरू THU	शुक्र FRI	शनि SAT
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

2025 मार्च MARCH

रवि SUN	सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरू THU	शुक्र FRI	शनि SAT
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

पूर्वोत्तर रेलवे
NORTH EASTERN RAILWAY

2025

मार्च MARCH

रवि SUN	सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरू THU	शुक्र FRI	शनि SAT
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

2025 फरवरी FEBRUARY

रवि SUN	सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरू THU	शुक्र FRI	शनि SAT
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	

2025 अप्रैल APRIL

रवि SUN	सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरू THU	शुक्र FRI	शनि SAT
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

पूर्वोत्तर रेलवे
NORTH EASTERN RAILWAY

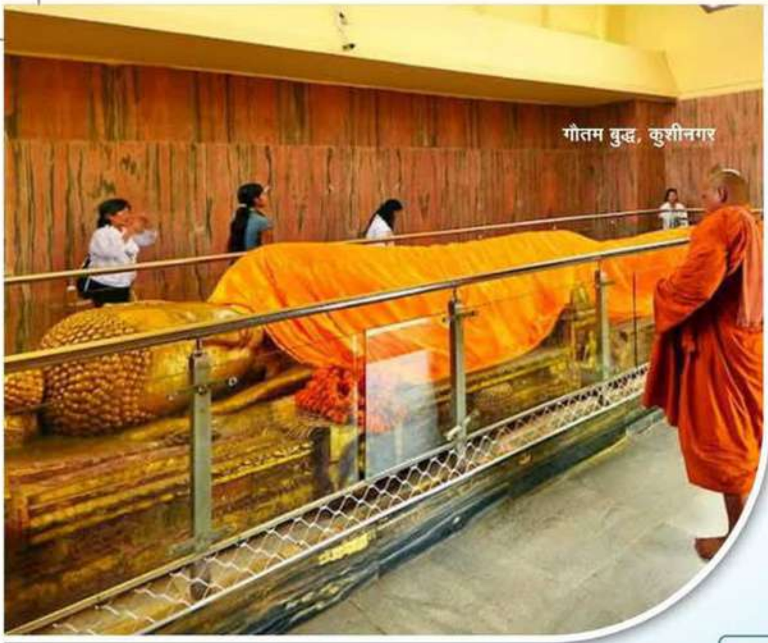

2025

अप्रैल APRIL

रवि SUN	सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरू THU	शुक्र FRI	शनि SAT
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

2025 मार्च MARCH

रवि SUN	सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरू THU	शुक्र FRI	शनि SAT
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

2025 मई MAY

रवि SUN	सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरू THU	शुक्र FRI	शनि SAT
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

पूर्वोत्तर रेलवे
NORTH EASTERN RAILWAY

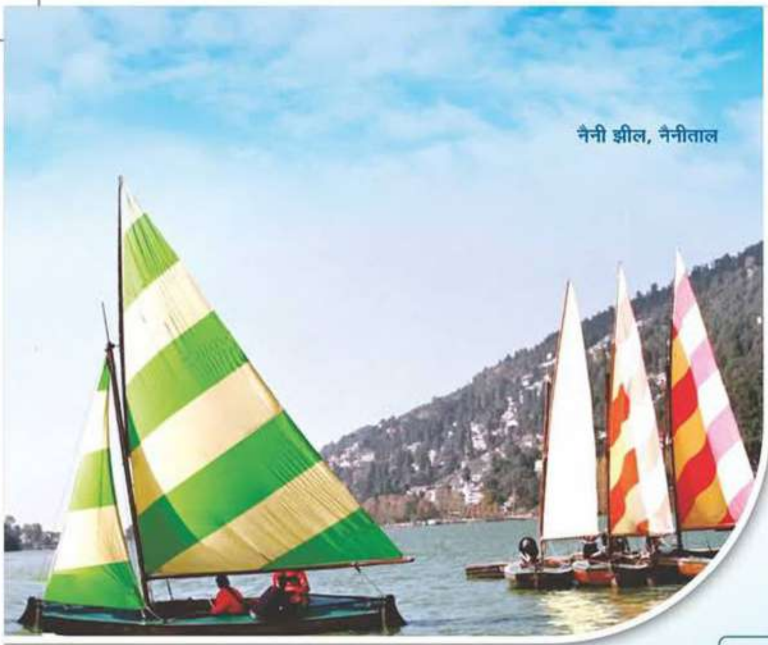
नैनी झील, नैनीताल

2025

मई MAY

रवि SUN	सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरू THU	शुक्र FRI	शनि SAT
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

2025 अप्रैल APRIL

रवि SUN	सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरु THU	शुक्र FRI	शनि SAT
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

2025 जून JUNE

रवि SUN	सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरु THU	शुक्र FRI	शनि SAT
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

पूर्वोत्तर रेलवे
NORTH EASTERN RAILWAY

जिम कार्बेट नेशनल पार्क, राम नगर

2025

जून JUNE

रवि SUN	सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरू THU	शुक्र FRI	शनि SAT
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

2025 मई MAY

रवि SUN	सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरु THU	शुक्र FRI	शनि SAT
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

2025 जुलाई JULY

रवि SUN	सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरु THU	शुक्र FRI	शनि SAT
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

पूर्वोत्तर रेलवे
NORTH EASTERN RAILWAY

2025

जुलाई JULY

रवि SUN	सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरू THU	शुक्र FRI	शनि SAT
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

2025 जून JUNE

रवि SUN	सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरू THU	शुक्र FRI	शनि SAT
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

2025 अगस्त AUGUST

रवि SUN	सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरू THU	शुक्र FRI	शनि SAT
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

पूर्वोत्तर रेलवे
NORTH EASTERN RAILWAY

2025

अगस्त AUGUST

रवि SUN	सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरू THU	शुक्र FRI	शनि SAT
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

2025 जुलाई JULY

रवि SUN	सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरू THU	शुक्र FRI	शनि SAT
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

2025 सितम्बर SEPTEMBER

रवि SUN	सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरू THU	शुक्र FRI	शनि SAT
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

पूर्वोत्तर रेलवे
NORTH EASTERN RAILWAY

छोटा इमामबाड़ा, लखनऊ

2025

सितम्बर SEPTEMBER

रवि SUN	सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरू THU	शुक्र FRI	शनि SAT
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

2025 — अगस्त AUGUST

रवि SUN	सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरू THU	शुक्र FRI	शनि SAT
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

2025 — अक्टूबर OCTOBER

रवि SUN	सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरू THU	शुक्र FRI	शनि SAT
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

पूर्वोत्तर रेलवे
NORTH EASTERN RAILWAY

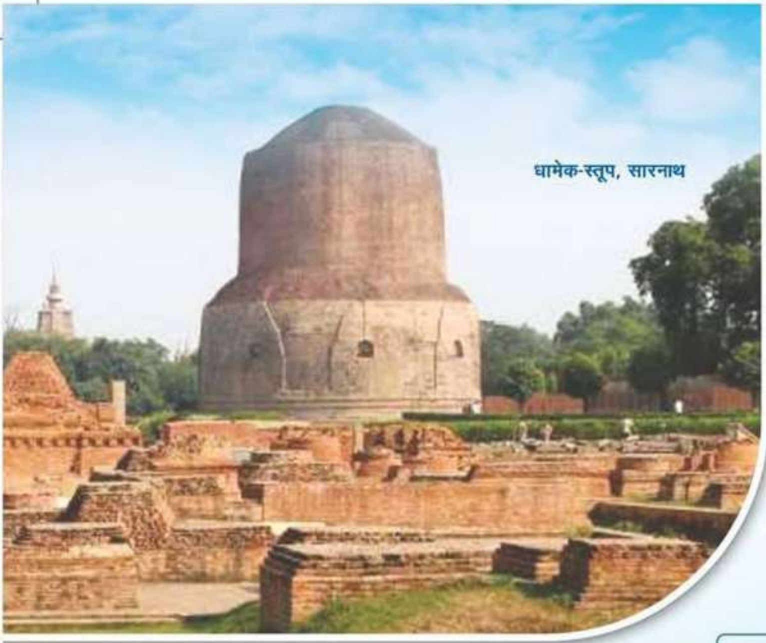

धामेक-स्तूप, सारनाथ

2025

अक्टूबर OCTOBER

रवि SUN	सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरू THU	शुक्र FRI	शनि SAT
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

2025 — सितम्बर SEPTEMBER

रवि SUN	सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरू THU	शुक्र FRI	शनि SAT
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

2025 — नवम्बर NOVEMBER

रवि SUN	सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरू THU	शुक्र FRI	शनि SAT
30						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

पूर्वोत्तर रेलवे
NORTH EASTERN RAILWAY

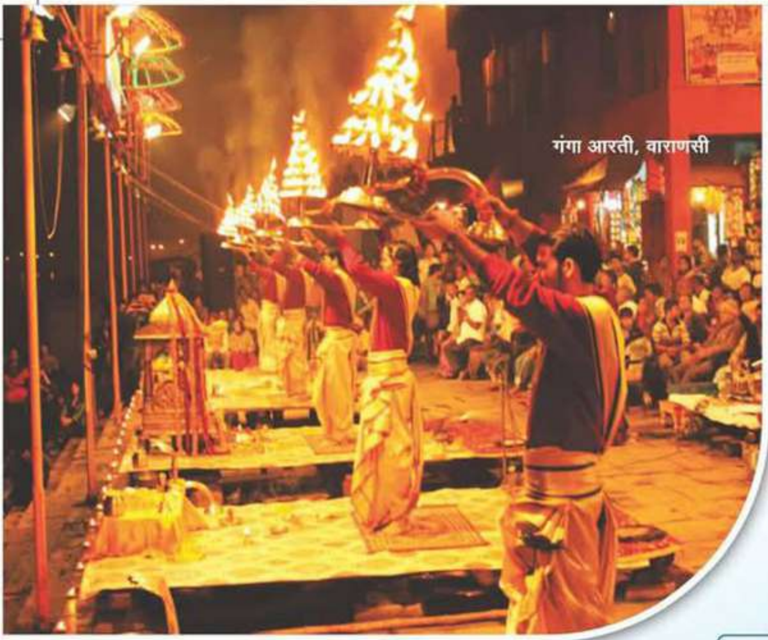
गंगा आरती, वाराणसी

2025

नवम्बर NOVEMBER

रवि SUN	सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरू THU	शुक्र FRI	शनि SAT
30						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

2025 अक्तूबर OCTOBER

रवि SUN	सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरू THU	शुक्र FRI	शनि SAT
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

2025 दिसम्बर DECEMBER

रवि SUN	सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरू THU	शुक्र FRI	शनि SAT
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

पूर्वोत्तर रेलवे
NORTH EASTERN RAILWAY

राम मन्दिर, अयोध्या

2025

दिसम्बर DECEMBER

रवि SUN	सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरू THU	शुक्र FRI	शनि SAT
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

2025 नवम्बर NOVEMBER

रवि SUN	सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरू THU	शुक्र FRI	शनि SAT
30						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

2026 जनवरी JANUARY

रवि SUN	सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरू THU	शुक्र FRI	शनि SAT
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

पूर्वोत्तर रेलवे
NORTH EASTERN RAILWAY

पूर्वोत्तर रेलवे
NORTH EASTERN RAILWAY

विक्रम संवत् 2081-82

शक संवत् 1946-47

जनवरी पौष-माघ January

सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरु THU	शुक्र FRI	शनि SAT	रवि SUN
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

फरवरी माघ-फाल्गुन February

सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरु THU	शुक्र FRI	शनि SAT	रवि SUN
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28		

मार्च फाल्गुन-चैत्र March

सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरु THU	शुक्र FRI	शनि SAT	रवि SUN
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

अप्रैल चैत्र-वैशाख April

सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरु THU	शुक्र FRI	शनि SAT	रवि SUN
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

मई वैशाख-ज्येष्ठ May

सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरु THU	शुक्र FRI	शनि SAT	रवि SUN
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

जून ज्येष्ठ-आषाढ़ June

सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरु THU	शुक्र FRI	शनि SAT	रवि SUN
30						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

जुलाई आषाढ़-श्रावण July

सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरु THU	शुक्र FRI	शनि SAT	रवि SUN
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

अगस्त श्रावण-भाद्रपद August

सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरु THU	शुक्र FRI	शनि SAT	रवि SUN
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

सितम्बर भाद्रपद-आश्विन September

सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरु THU	शुक्र FRI	शनि SAT	रवि SUN
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

अक्टूबर आश्विन-कार्तिक October

सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरु THU	शुक्र FRI	शनि SAT	रवि SUN
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

नवम्बर कार्तिक-मार्गशीर्ष November

सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरु THU	शुक्र FRI	शनि SAT	रवि SUN
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

दिसम्बर मार्गशीर्ष-पौष December

सोम MON	मंगल TUE	बुध WED	गुरु THU	शुक्र FRI	शनि SAT	रवि SUN
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

वर्ष 2025 हेतु कार्यालयों में मनायी जाने वाली सार्वजनिक अवकाश की सूची

गणतंत्र दिवस	26.01.2025	मिलाद-उन-नबी/ ईद-ए-मिलाद*	05.09.2025
होली	14.03.2025	दशहरा (महानवमी)	01.10.2025
ईद-उल-फितर*	31.03.2025	महात्मा गाँधी जन्म दिवस	02.10.2025
महावीर जयंती	10.04.2025	दीपावली	20.10.2025
गुड फ्राइडे	18.04.2025	छठ पूजा	28.10.2025
बुद्ध पूर्णिमा	12.05.2025	गुरू नानक जन्म दिवस	05.11.2025
ईद-उल-जुहा (बकरीद)*	07.06.2025	क्रिसमस दिवस	25.12.2025
मुहर्रम*	06.07.2025		
स्वतंत्रता दिवस	15.08.2025		

नोट- *चन्द्र दर्शन पर आधारित

वर्ष 2025 हेतु कार्यालयों में मनाये जाने वाली निबर्जित अवकाश की सूची

नव वर्ष दिवस	01.01.2025	गणेश चतुर्थी	27.08.2025
गुरू गोविन्द सिंह जयंती	06.01.2025	ओनम	05.09.2025
मकर संक्रान्ती/माघ/बिहू/ पोंगल/हजरत अली जन्म दिवस	14.01.2025	दशहरा (सप्तमी)	29.09.2025
गुरू रविदास जन्म दिवस	12.02.2025	दशहरा (महाष्टमी)	30.09.2025
शिवा जी जयन्ती	19.02.2025	महर्षि वाल्मीकि जयंती	07.10.2025
होलिका दहन	13.03.2025	करवा चतुर्थी (करवा चौथ)	10.10.2025
ढोल यात्रा	14.03.2025	नरका चतुर्थदशी	20.10.2025
जमात-उल-विदा*	28.03.2025	गोवर्धन पूजा	22.10.2025
गुरू रविन्द्र नाथ जयन्ती	09.05.2025	भईया दूज	23.10.2025
रथ यात्रा	27.06.2025	गुरू तेग बहादुर शहादत दिन	24.11.2025
रक्षा बन्धन	09.08.2025	क्रिसमस पूर्व संध्या	24.12.2025

नोट- *चन्द्र दर्शन पर आधारित

वर्ष 2025 हेतु लाइन कर्मचारियों के लिए अवकाश की सूची

गणतंत्र दिवस	26.01.2025
होली	14.03.2025
ईद-उल-फितर*	31.03.2025
महावीर जयंती	10.04.2025
गुड फ्राइडे	18.04.2025
स्वतंत्रता दिवस	15.08.2025
दशहरा (महानवमी)	01.10.2025
महात्मा गाँधी जन्म दिवस	02.10.2025
दीपावली	20.10.2025
छठ पूजा	28.10.2025
गुरू नानक जन्म दिवस	05.11.2025
क्रिसमस दिवस	25.12.2025

नोट- *चन्द्र दर्शन पर आधारित

रेल मदद हेल्पलाइन नंबर 139 | nerailwaygkp | nerailwaygkp | n.e.railwaygkp | @nerailwaygkp | www.ner.indianrailways.gov.in | पंकज कुमार सिंह, मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी, पूर्वोत्तर रेलवे द्वारा प्रकाशित

अवकाश तालिका 2025

2025 अवकाश तालिका

वर्ष 2025 हेतु कार्यालयों में मनायी जाने वाली सार्वजनिक अवकाश की सूची

छुट्टियों का विवरण	दिनांक
गणतन्त्र दिवस	26.01.2025
होली	14.03.2025
ईद-उल-फितर*	31.03.2025
महावीर जयन्ती	10.04.2025
गुड फ्राइडे	18.04.2025
बुद्ध पूर्णिमा	12.05.2025
ईद-उल-जुहा (बकरीद)*	07.06.2025
मुहर्रम*	06.07.2025
स्वतन्त्रता दिवस	15.08.2025
मिलाद-उन-नवी/ईद-ए-मिलाद*	05.09.2025
दशहरा (महानवमी)	01.10.2025
महात्मा गाँधी जन्म दिवस	02.10.2025
दीपावली	20.10.2025
छठ पूजा	28.10.2025
गुरू नानक जन्म दिवस	05.11.2025
क्रिसमस दिवस	25.12.2025

नोटः *चन्द्र दर्शन पर आधारित

वर्ष 2025 हेतु कार्यालयों में मनाये जाने वाली निवर्जित अवकाश की सूची

छुट्टियों का विवरण	दिनांक
नव वर्ष दिवस	01.01.2025
गुरू गोविन्द सिंह जयन्ती	06.01.2025
मकर संक्रान्ती/माघ बिहू/पोंगल/ हजरत अली जन्म दिवस	14.01.2025
गुरू रविदास जन्म दिवस	12.02.2025
शिवाजी जयन्ती	19.02.2025
होलिका दहन	13.03.2025
ढोल यात्रा	14.03.2025
जमात-उल-विदा*	28.03.2025
गुरू रविन्द्र नाथ जयन्ती	09.05.2025
रथ यात्रा	27.06.2025
रक्षा बन्धन	09.08.2025
गणेश चतुर्थी	27.08.2025
ओनम	05.09.2025
दशहरा (सप्तमी)	29.09.2025
दशहरा (महाअष्टमी)	30.09.2025
महर्षि वाल्मीकि जयंती	07.10.2025
कारका चतुर्थी (करवा चौथ)	10.10.2025
नरका चतुर्थदशी	20.10.2025
गोवर्धन पूजा	22.10.2025
भईया दूज	23.10.2025
गुरू तेगबहादुर शहादत दिन	24.11.2025
क्रिसमस पूर्व संध्या	24.12.2025

नोटः *चन्द्र दर्शन पर आधारित

वर्ष 2025 हेतु लाइन कर्मचारियों के लिए अवकाश की सूची

छुट्टियों का विवरण	दिनांक
गणतन्त्र दिवस	26.01.2025
होली	14.03.2025
ईद उल फितर*	31.03.2025
महावीर जयन्ती	10.04.2025
गुड फ्राइडे	18.04.2025
स्वतन्त्रता दिवस	15.08.2025
दशहरा (महानवमी)	01.10.2025
महात्मा गाँधी जन्म दिवस	02.10.2025
दीपावली	20.10.2025
छठ पूजा	28.10.2025
गुरू नानक जन्म दिवस	05.11.2025
क्रिसमस दिवस	25.12.2025

नोटः *चन्द्र दर्शन पर आधारित

पूर्वोत्तर रेलवे NORTH EASTERN RAILWAY

"

मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूं, पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, ये मैं सह नहीं सकता।

आचार्य विनोबा भावे

राजभाषा विभाग की गतिविधियां

डॉ विद्यानिवास मिश्र हिंदी पुस्तकालय, मंडल चिकित्सालय में डॉ विद्यानिवास मिश्र जी की जयंती समारोह का आयोजन

राजभाषा विभाग की गतिविधियां

मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, वाराणसी के हिंदी पुस्तकालय में बसंत पंचमी के अवसर पर सरस्वती पूजा एवं हिंदी साहित्यकार सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी की जयंती कार्यक्रम का आयोजन

हिन्दुस्तान

डीआरएम दफ्तर में मनाई निराला की जयंती

वाराणसी। एनईआर वाराणसी मंडल के राजभाषा विभाग की ओर से सोमवार को लहरतारा स्थित डीआरएम कार्यालय में हिंदी साहित्यकार सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की जयंती मनाई गई। शुभारम्भ वरिष्ठ राजभाषा अनुवादक पूनम त्रिपाठी ने पुष्पांजलि अर्पित कर किया। पूर्व वरिष्ठ राजभाषा अनुवादक मनोज दुबे सहित अन्य कर्मचारियों ने उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला। इस मौके पर दीपक कुमार मिश्र, राहुल कुमार, अंकुर कुमार, पूनम श्रीवास्तव, गायत्री यादव आदि रहीं।

मंडल की गतिविधियां

दिनांक 25 जनवरी 2025 को वाराणसी मंडल पर रेलवे पेंशनर्स के लिए डिजिटल साक्षरता प्रशिक्षण का आयोजन

मंडल की गतिविधियां

26 जनवरी, 2025 को वाराणसी मंडल पर 76वें गणतंत्र दिवस का आयोजन

मंडल की गतिविधियां

पुष्प प्रदर्शनी में पूर्वोत्तर रेलवे के वाराणसी मंडल को सर्वाधिक पुरस्कार

मंडल की गतिविधियां

रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव जी ने प्रयागराज, महाकुम्भ में रेल कर्मयोगी के
अथक प्रयासों के लिए आभार व्यक्त किया और
उनकी प्रशंसा को साथ रेल परिवार सभी को बधाई दी

मंडल की गतिविधियां

मंडल रेल प्रबंधक श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव अध्यक्षता में आयोजित सादे समारोह में वाराणसी मंडल से 12 कर्मचारी सेवानिवृत्त

काशी प्रतिबिंब

आभासी अंक 07
मार्च 2025

राजभाषा विभाग
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी